समास

- समास का अर्थ 'संक्षिप्त' होता है। समास का तात्पर्य है 'संक्षिप्तीकरण'।
- दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं।
- कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना समास का लक्ष्य होता है।

  जैसे –

  'रसोई के लिए घर' इसे हम 'रसोईघर' भी कह सकते हैं।

समास विग्रह

- सामासिक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।

  जैसे-

  राजपुत्र – राजा का पुत्र

  देशवासी – देश के वासी

  हिमालय – हिम का आलय

पूर्वपद और उत्तरपद

- समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

  जैसे-

  गंगाजल। इसमें गंगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।

सामान्यतः समास छह प्रकार के माने गए हैं।

1. अव्ययीभाव (पूर्वपद प्रधान होता है।)
2. तत्पुरुष (उत्तरपदप्रधान होता है।)
3. कर्मधारय (दोनों पद प्रधान।)
4. द्विगु (पहला पद संख्यावाचक होता है।)
5. द्वन्द्व (दोनों पद प्रधान होते है , विग्रह करने पर दोनों शब्द के बीच (–)हेफन लगता है।)
6. बहुब्रीहि (किसी तीसरे शब्द की प्राप्ति होती है।)

1. अवययीभाव समास

- जिस सामासिक पद का पूर्वपद (पहला पद प्रधान) प्रधान हो , तथा समासिक पद अव्यय हो , उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

  जैसे-

प्रतिदिन , आमरण , यथासंभव इत्यादि।

संस्कृत शब्द - यथाशक्ति, आजीवन, आजन्म, ध्यानपूर्वक, प्रतिदिन, निःसंकोच, निर्भय, सपत्नीक, सपरिवार

हिन्दी शब्द - एकाएक, निडर, आमने-सामने, दिनभर, रातोरात, हाथोंहाथ, धीरे-धीरे, पल-पल, दुबारा, धमाधम,

उर्दू शब्द - बेशक, हररोज़, बेखटके

अन्य उदाहरण

प्रति + कूल- प्रतिकूल
आ + जन्म- आजन्म
प्रति + दिन - प्रतिदिन
यथा + संभव- यथासंभव
अनु + रूप - अनुरूप
भर + पेट - भरपेट
आजन्म – जन्म से लेकर
यथास्थान – स्थान के अनुसार
आमरण – मृत्यु तक
अभूतपूर्व – जो पहले नहीं हुआ

निर्भय – बिना भय के
निर्विवाद – बिना विवाद के
निर्विकार – बिना विकार के
प्रतिपल – हर पल
अनुकूल – मन के अनुसार
अनुरूप – रूप के अनुसार
यथासमय – समय के अनुसार
यथाक्रम – क्रम के अनुसार
यथाशीघ्र – शीघ्रता से
अकारण – बिना कारण के

2. तत्पुरुष समास

- तत्पुरुष समास का उत्तरपद अथवा अंतिम पद प्रधान होता है। ऐसे समास में परायः प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होते हैं। द्वितीय पद के विशेष्य होने के कारण समास में इसकी प्रधानता होती है।

तत्पुरुष समास के छः भेद हैं –

1. कर्म तत्पुरुष
2. करण तत्पुरुष
3. संप्रदान तत्पुरुष
4. अपादान तत्पुरुष
5. संबंध तत्पुरुष
6. अधिकरण तत्पुरुष

1. कर्म तत्पुरुष

- तत्पुरुष समास में दोनों शब्दों के बीच का कारक चिन्ह लुप्त हो जाता है।

जैसे -

राजा का कुमार = राजकुमार

धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ

रचना को करने वाला = रचनाकार

- इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है।

जैसे -

सर्वभक्षी – सब का भक्षण करने वाला

यशप्राप्त – यश को प्राप्त

मनोहर – मन को हरने वाला

गिरिधर – गिरी को धारण करने वाला

कठफोड़वा – कांठ को फ़ोड़ने वाला

माखनचोर – माखन को चुराने वाला।

शत्रुघ्न – शत्रु को मारने वाला

गृहागत – गृह को आगत

मुंहतोड़ – मुंह को तोड़ने वाला

कुंभकार – कुंभ को बनाने वाला

2. करण तत्पुरुष

- इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के', 'द्वारा' का लोप हो जाता है।

जैसे –

सूररचित – सूर द्वारा रचित

तुलसीकृत – तुलसी द्वारा रचित

शोकग्रस्त – शोक से ग्रस्त

पर्णकुटीर – पर्ण से बनी कुटीर

रोगातुर – रोग से आतुर

अकाल पीड़ित– अकाल से पीड़ित

कर्मवीर – कर्म से वीर

रक्तरंजित – रक्त से रंजीत

जलाभिषेक – जल से अभिषेक

करुणा पूर्ण – करुणा से पूर्ण

रोगग्रस्त – रोग से ग्रस्त

मदांध – मद से अंधा

गुणयुक्त – गुणों से युक्त

अंधकार युक्त – अंधकार से युक्त

भयाकुल – भय से आकुल

पददलित – पद से दलित

मनचाहा – मन से चाहा

3. संप्रदान तत्पुरुष

- इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति ‘के लिए ‘लुप्त हो जाती है।

जैसे -

युद्धभूमि –	युद्ध के लिए भूमि	भिक्षाटन –	भिक्षा के लिए ब्राह्मण
रसोईघर –	रसोई के लिए घर	राहखर्च –	राह के लिए खर्च
सत्याग्रह –	सत्य के लिए आग्रह	विद्यालय –	विद्या के लिए आलय
हथकड़ी –	हाथ के लिए कड़ी	विधानसभा –	विधान के लिए सभा
देशभक्ति –	देश के लिए भक्ति	स्नानघर –	स्नान के लिए घर
धर्मशाला –	धर्म के लिए शाला	डाकगाड़ी –	डाक के लिए गाड़ी
पुस्तकालय –	पुस्तक के लिए आलय	परीक्षा भवन–	परीक्षा के लिए भवन
देवालय –	देव के लिए आलय	प्रयोगशाला –	प्रयोग के लिए शाला

4. अपादान तत्पुरुष

- इसमें अपादान कारक की विभक्ति ‘से’ लुप्त हो जाती है।

जैसे -

जन्मांध –	जन्म से अंधा	गुणहीन –	गुण से हीन
कर्महीन –	कर्म से हीन	धनहीन –	धन से हीन
वनरहित –	वन से रहित	स्वादरहित –	स्वाद से रहित
अन्नहीन –	अन्न से हीन	ऋणमुक्त –	ऋण से मुक्त
जातिभ्रष्ट –	जाति से भ्रष्ट	पापमुक्त –	पाप से मुक्त
नेत्रहीन –	नेत्र से हीन	फलहीन –	फल से हीन
देशनिकाला –	देश से निकाला	भयभीत –	भय से डरा हुआ
जलहीन –	जल से हीन		

5. संबंध तत्पुरुष

- इसमें संबंध कारक की विभक्ति ‘का’ , ‘के’ , ‘की’ लुप्त हो जाती है।

जैसे -

जलयान –	जल का यान	विद्याभ्यास –	विद्या का अभ्यास
छात्रावास –	छात्रो का वास	सेनापति –	सेना का पति
चरित्रहीन –	चरित्र से हीन	कन्यादान –	कन्या का दान
कार्यकर्ता –	कार्य का करता	गंगाजल –	गंगा का जल

गोपाल – गो का पालक
गृहस्वामी – गृह का स्वामी
राजकुमार – राजा का कुमार
पराधीन – पर के अधीन
आनंदाश्रम – आनंद का आश्रम
राजपूत्र – राजा का पुत्र
विद्यासागर – विद्या का सागर
राजाज्ञा – राजा की आज्ञा
देशरक्षा – देश की रक्षा
शिवालय – शिव का आलय

6. अधिकरण तत्पुरुष

- इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति ‘में ‘,‘पर ‘लुप्त हो जाती है।

जैसे -

रणधीर – रण में धीर
क्षणभंगुर – क्षण में भंगुर
पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम
आपबीती – आप पर बीती
लोकप्रिय – लोक में प्रिय
कविश्रेष्ठ – कवियों में श्रेष्ठ
कृषिप्रधान – कृषि में प्रधान
शरणागत – शरण में आगत
कलाप्रवीण – कला में प्रवीण
युधिष्ठिर – युद्ध में स्थिर
कलाश्रेष्ठ – कला में श्रेष्ठ
आनंदमग्न – आनंद में मग्न
गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश
आत्मनिर्भर – आत्म पर निर्भर
शोकमग्न – शोक में मगन
धर्मवीर – धर्म में वीर

3. कर्मधारय समास

- कर्मधाराय तथा द्विगु समास तत्पुरुष के ही रूप है।
- जिस तत्पुरुष समास के समस्त पद समान रूप से प्रधान हो , तथा विशेष्य – विशेषण भाव को प्राप्त होते हैं। उनके लिंग , वचन भी समान हो वहां कर्मधारय समास होता है।

कर्मधारय समास चार प्रकार के होते हैं –

1. विशेषण + विशेष्य - जैसे - महात्मा, महाराज, नीलकमल, नीलगाय
2. विशेष्य + विशेषण - जैसे - पुरुषोत्तम, नरोत्तम, देशांतर, मुनिवर
3. विशेषण + विशेषण(अथवा उपमेय + उपमान) - जैसे - मोटा-ताजा, सीधा-साधा, हरा-भरा
4. विशेष्य + विशेष्य(अथवा उपमान + उपमेय) - जैसे - चरणकमल, चंद्रमुख, भवसागर

- आसानी से समझे तो जिस समस्त पद का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान – उपमेय तथा विशेषण -विशेष्य संबंध हो कर्मधारय समास कहलाता है।

अधमरा – आधा है जो मरा
महादेव – महान है जो देव

प्राणप्रिय –	प्राणों से प्रिय	दुर्जन –	दुष्ट है जो जन
मृगनयनी –	मृग के समान नयन	चरणकमल –	चरण के समान कमल
विद्यारत्न –	विद्या ही रत्न है	नरसिंह –	नर मे सिंह के समान
चंद्रमुख –	चंद्र के समान मुख	कनकलता –	कनक की सी लता
श्यामसुंदर –	श्याम जो सुंदर है	नीलकमल –	नीला कमल
क्रोधाग्नि –	क्रोध रूपी अग्नि	महात्मा –	महान है जो आत्मा
नीलकंठ –	नीला है जो कंठ	महावीर –	महान है जो वीर
महापुरुष –	महान है जो पुरुष	परमानंद –	परम है जो आनंद
महाकाव्य –	महान काव्य		

4. द्विगु समास

- कर्मधाराय तथा द्विगु समास तत्पुरुष के ही रूप है।
- जिस समस्त पद का पहला पद (पूर्वपद) संख्यावाचक विशेषण हो वह द्विगु समास कहलाता है। द्विगु समास दो प्रकार के होते हैं

जैसे -

सतसयैया -	सात सौ दोहो का समूह	त्रिकोण –	तीनों कोणों का समाहार
नवरात्रि –	नवरात्रियों का समूह	पंचमेवा –	पांच फलों का समाहार
सप्तऋषि –	सात ऋषियों का समूह	दोपहर –	दोपहर का समूह
पंचमढ़ी –	पांच मणियों का समूह	सप्तसिंधु –	सात सिंधुयों का समूह
त्रिनेत्र –	तीन नेत्रों का समाहार	चौराहा –	चार राहों का समूह
अष्टधातु –	आठ धातुओं का समाहार	नवग्रह –	नौ ग्रहों का समाहार
तिरंगा –	तीन रंगों का समूह	तिमाही –	3 माह का समाहार
सप्ताह –	सात दिनों का समूह	चतुर्वेद –	चार वेदों का समाहार

5. द्वंद समास

- द्वंद समास जिस समस्त पदों के दोनों पद प्रधान हो , तथा विग्रह करने पर 'और' , ' अथवा ' , 'या' , 'एवं' लगता हो वह द्वंद समास कहलाता है। इसके तीन भेद हैं –

1. इतरेत्तर द्वंद
2. वैकल्पिक द्वंद।
3. समाहार द्वंद

1. इतरेत्तर द्वंद - इस पद मे 'और' का लोप होता है -
   जैसे -
   दाल-रोटी, माँ-बाप, अन्न-जल, नीचे-ऊपर, आना-जाना, सीता-राम, राधा-कृष्ण
2. वैकल्पिक द्वंद - जिस पद मे 'या/अथवा' का लोप हो।
   जैसे -
   थोड़ा-बहुत, आय-व्यय, जीवन-मरण, हानि-लाभ
3. समाहार द्वंद - ऐस युग्म जिनसे दो पदो के अर्थ के अतिरिक्त कुछ और अर्थ भी निकले।
   जैसे -
   दाल-रोटी चलती है। (अर्थात घर का सामान चलता है)
   हांथ-पांव हिलाओ। (कुछ काम करो)
   जैसे -

अन्न – जल	=	अन्न और जल	देश – विदेश	=	देश और विदेश
नदी – नाले	=	नदी और नाले	सुख – दुख	=	सुख और दुख
धन – दौलत	=	धन और दौलत	पाप – पुण्य	=	पाप और पुण्य
मार-पीट	=	मार और पीट	अपना – पराया	=	अपना और पराया
आग – पानी	=	आग और पानी	नर – नारी	=	नर और नारी
गुण – दोष	=	गुण और दोष	राजा – प्रजा	=	राजा और प्रजा
पाप – पुण्य	=	पाप या पुण्य	छल – कपट	=	छल और कपट
ऊंच – नीच	=	ऊंच या नीचे	ठंडा – गर्म	=	ठंडा या गर्म
आगे – पीछे	=	आगे और पीछे	राधा – कृष्ण	=	राधा और कृष्ण

6. बहुव्रीहि समास

- जिस पद में कोई पद प्रधान नहीं होता दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं उसमें बहुव्रीहि होता है।
- बहुव्रीहि समास में आए पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पदार्थ की प्रधानता हो तब उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जिस समस्त पद में कोई पद प्रधान नहीं होता , दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं , उसमें बहुव्रीहि समास होता है।
  जैसे –
  नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव इस समास के पदों में कोई भी पद प्रधान नहीं है , बल्कि पूरा पद किसी अन्य पद का विशेषण होता है।

चतुरानन – चार है आनन जिसके अर्थात ब्रह्मा
चक्रपाणि – चक्र है पाणी में जिसके अर्थात विष्णु
चतुर्भुज – चार है भुजाएं जिसकीअर्थात विष्णु
पंकज – पंक में जो पैदा हुआ हो अर्थात कमल
वीणापाणि – वीणा है कर में जिसके अर्थात सरस्वती
लंबोदर – लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश
गिरिधर – गिरी को धारण करता है जो अर्थात कृष्ण
पितांबर – पीला हैं अंबर जिसका अर्थात कृष्ण
निशाचर – निशा में विचरण करने वाला अर्थात राक्षस
मृत्युंजय – मृत्यु को जीतने वाला अर्थात शंकर
घनश्याम – घन के समान है जो अर्थात श्री कृष्ण
दशानन – दस है आनन जिसके अर्थात रावण
नीलांबर – नीला है जिसका अंबर अर्थात श्री कृष्णा
त्रिलोचन – तीन है लोचन जिसके अर्थात शिव
चंद्रमौली – चंद्र है मौली पर जिसके अर्थात शिव
विषधर – विष को धारण करने वाला अर्थात सर्प
प्रधानमंत्री – मंत्रियों मे जो प्रधान हो अर्थात प्रधानमंत्री

समास में अंतर –

कर्मधारय और बहुव्रीहि में अंतर

- कर्मधारय में समस्त-पद का एक पद दूसरे का विशेषण होता है। इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है।
  जैसे –
  नीलकंठ = नीला कंठ।

- बहुव्रीहि में समस्त पाद के दोनों पादों में विशेषण-विशेष्य का संबंध नहीं होता अपितु वह समस्त पद ही किसी अन्य संज्ञादि का विशेषण होता है।
  इसके साथ ही शब्दार्थ गौण होता है और कोई भिन्नार्थ ही प्रधान हो जाता है।
  जैसे –
  नील+कंठ = नीला है कंठ जिसका शिव

- इन दोनों समासों में अंतर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए , कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है , और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है।

  जैसे –

  नीलगगन में – नील विशेषण है , तथा गगन विशेष्य है।

  इसी तरह

  चरणकमल में – चरण उपमेय है , कमल उपमान है।

  अतः यह दोनों उदाहरण कर्मधारय समास के हैं।
- बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है।

  जैसे –

  चक्रधर – चक्र को धारण करता है जो , अर्थात श्री कृष्ण।

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

- बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है , जबकि द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है। और दूसरा पर विशेष्य होता है।

  जैसे –

  दशानन – दश आनन है जिसके अर्थात रावण। बहुव्रीहि समास

  चतुर्भुज – चार भुजाओं का समूह द्विगु समास

  दशानन – दश आननों का समूह द्विगु समास।

  चतुर्भुज – चार है भुजाएं जिसकी अर्थात विष्णु , बहुव्रीहि समास

द्विगु और कर्मधारय में अंतर

- द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है , जो दूसरे पद की गिनती बताता है। जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्या कभी नहीं होता है। द्विगु का पहला पद विशेषण बनकर प्रयोग में आता है , जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है।

  जैसे –

  नवरत्न – नौ रत्नों का समूह द्विगु समास

  पुरुषोत्तम – पुरुषों में जो उत्तम है कर्मधारय समास

  रक्तोत्पन – रक्त से जो उत्पन कर्मधारय समास।

  चतुर्वर्ण – चार वर्णों का समूह द्विगु समास

संधि और समास में अंतर

- संधि वर्णों में होती है। इसमें विभक्ति या शब्द का लोप नहीं होता है।

  जैसे –

  देव + आलय = देवालय।

  समास दो पदों में होता है। यह होने पर विभक्ति या शब्दों का लोप भी हो जाता है।

  जैसे –

  माता और पिता = माता-पिता।
- संधि वर्णों का मेल है और समास शब्दों का मेल है।
- संधि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन भी होते हैं , जबकि समास में ऐसा नहीं होता समास में बहुत से पदों के बीच के कारक चिन्हों का अथवा समुच्चयबोधक का लोप हो जाता है।

  जैसे -

  विद्या + आलय = विद्यालय संधि

  राजा का पुत्र = राजपुत्र समास